राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँ

"Obstacles in the path of National Integration"

राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने एवं उसके सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्रीय एकता परम आवश्यकता है

जातिवाद Casteism राष्ट्रीय एकता उसी समय उत्पन्न हो सकती है जब व्यक्तियों में समानता की भावना हो अर्थात उनमें ऊँच-नीच की भावना न हो लेकिन भारत में जातिवाद का बहुत जोर है। जातिवाद से प्रभावित होकर एक जाति के लोग दूसरी जातियों के लोगों से वैमनस्य या घृणकता जैसा व्यवहार करने लगते है।

साम्प्रदायिकता 'Communalism' हमारे देश में राष्ट्रीय एकता को साम्प्रदायिकता से भी बड़ा खतरा है भारत में अनेक सम्प्रदायों हैं हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी बौद्ध इत्यादि। उनमें से भी हिन्दू अनेक सम्प्रदायों व उप सम्प्रदायों में बंटे हुए हैं

राजनीतिक दल Political Parties लोकतन्त्र में विभिन्न विचार धाराओं और आदर्शों वाले राजनीतिक दलों का होना अनिवार्य है। क्योंकि जनता में उनसे ही राजनीतिक चेतना का विकास एवं जनमत का निर्माण होता है

लेकिन हमारे देश में ऐसे दलों की संख्या कम है जो राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। अधिकांश दल तो जाति, भाषा धर्म एवं सम्प्रदाय के आधार पर राष्ट्र को विकसित करने का कार्य कर रहे हैं

विभिन्न भाषाएँ 'Different Languages' हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रायः ये विभिन्न भाषा-भाषी केवल अपनी भाषा को महत्व देते हैं। तथा अन्य भाषाओं के प्रति उपेक्षा तथा घृणा का दृष्टिकोण रखते हैं।

राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में शिक्षा का योगदान
'Role of Education in Establishing National Integration'

1 दैनिक प्रातः सभा कार्यक्रम :- सभी विद्यालयों का कार्यक्रम 15 मिनट की दैनिक सामूहिक सभा से आरम्भ होना चाहिए। इसमें राष्ट्रगान नैतिक शिक्षा आदि की बाते बच्चों को बताई जानी चाहिए। तथा समय समय पर राष्ट्रीय एकता पर भाषण दिये जाने चाहिए।

2 महापुरुषों के जन्मदिन का आयोजन ÷ भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों और महापुरुषों के जन्म दिवस विद्यालय में मनाए जाने चाहिए। पण्डित नेहरू, सरदार पटेल, स्वामी विवेकानन्द, 2 अक्टूबर गाँधी जयन्ती आदि महापुरुषों के जन्म दिवस पर उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाये जाने चाहिए।

राष्ट्रीय पर्वो का आयोजन :- स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस शहीद दिवस गाँधी जयन्ती राष्ट्रीय पर्वों पर छात्रों के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास और उनके बलिदानों के बाद प्राप्त की गयी स्वतन्त्रता के विषय में बताया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय एकता के विकास में शिक्षक की भूमिका
Role of teacher in the Development of National Integration

1 विद्यार्थियों में सहयोग की भावना का विकास करना - देश में राष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिए देश के नागरिकों में राष्ट्रीय और भावनात्मक एकता का समावेश होना आवश्यक है। नागरिकों में राष्ट्रीय एकता का विकास एक शिक्षक द्वारा ही किया जा सकता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों के स्थान, जाति, धर्म और संस्कृति के आधार पर भेद न करके उनमें सहयोग की भावना का विकास करता है।

विद्यार्थियों को उत्तम नागरिक बनाना :- एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों में उत्तम नागरिकता का विकास करता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय पर्वों की जानकारी विकास कर विद्यार्थियों उत्तम नागरिक बनाता है यही नागरिक आगे चलकर राष्ट्र के निर्माण एवं उसके एकीकरण को स्थापित कर अपने ज्ञान एवं गुणों का प्रवाह अपनी भावी पीढ़ियों को करते है।

विद्यार्थियों में जाति, धर्म, लिंग तथा क्षेत्रीयता की भावना को समाप्त करना।

वर्तमान समय में जाति, धर्म, लिंग तथा क्षेत्रीयता की भावना राष्ट्रीय एकीकरण में प्रमुख रूप से बाधक है। शिक्षक विद्यार्थियों के मध्य जाति एवं धर्म की ऊँच-नीच की भावना को मिटाकर उन्हें एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है।

'राष्ट्रीय एकता के विकास में शिक्षा के कार्य'

Function of Education in the Development of National Integration

1 राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास - नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हो उनके अन्दर देश के प्रति प्रेम-व देश हित की भावना का विकास करना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक के मन में राष्ट्र-सेवा की भावना का विकास कर सके।

2- अच्छे नागरिकों का निर्माण : किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए उसके नागरिकों को योग्य, चरित्रवान तथा राष्ट्रीय गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए अतः शिक्षा बालक को इस योग्य बनाती है कि वह अपने कर्तव्यों व अधिकारों का पालन कर सके।

AKHILESH YADAV
(B.Ed - M.Ed BHU)